भारतीय साहित्य रा निरमाता

बादर ढाढ़ी

लेखक
माधोसिंह इन्दा

RJ
817.509 2
In 2 B

साहित्य अकादेमी

RJ
817.5092
In2B

भारतीय साहित्य रा निरमाता

बादर ढाढ़ी

लेखक

माधोसिंह इन्दा

साहित्य अकादेमी

Badar Dhadhi : A monograph in Rajasthani by Madho Singh Inda on the Rajasthani author. Sahitya Akademi, New Delhi (2002), Rs. 25.

© साहित्य अकादेमी
पैली खेप : 2002

RJ
817.5092
In 2 B

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35 फिरोजसाह मारग, नवी दिल्ली 110 001
बेचण री पेढी : 'स्वाति', मिंदर मारग, नवी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

शारदा सिनेमा बिल्डिंग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा, चौथा तल, 23 ए/44, डायमंड हार्बर मारग, कोलकाता 700 053
सेण्ट्रल कॉलेज कैम्पस, डॉ. बी. आर. अम्बेदकर वीथि, बैंगलोर 560 001
सी. आई. टी. कैम्पस, टी. टी. टी. आई. पोस्ट, तारामणी, चेन्नई 600 113

मोल : पच्चीस रिपिया

ISBN 81-260-1167-9

Indian Institute of Advanced Study
115827
10/11/04
Library
IIAS, Shimla
RJ 817.509 2 In 2 B
00115827

Website : http://www.sahitya-akademi.org

टाइपसेटिंग : पैरागान एण्टरप्राइसेज़, नवी दिल्ली 110 002
मुद्रक : सुपर प्रिंटर्स, दिल्ली 110 051

विगत़

बादर ढाढ़ी अर सैंजोड़ जुग 7

बादर ढाढ़ी रो जीवन वृतान्त, वीरवांण रो रचनाकाल अर कवि रो स्थान 9

वीरवांण–मीमांसा कथ्य, शिल्प अर संवेदना री दीठ सूं 15

मूल्यांकन 37

सार–संकलन 45

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 47

बादर ढाढ़ी अर सैंजोड़ जुग

रंगरूड़े राजस्थान री धरा "वीरभोग्या वसुन्धरा" री ओळखाण हैं अर, "मरणां नूं मंगल गिणै" रो प्रमाण है, औ मरू–मैहराण वीरता रै बखांण नै कीरत रे कमठांण री घणमूंघी खाण है। औ राजस्थान इणी वीरता, त्याग अर बलिदान रै खातर मुलकां चावौ है। अठारी वीर परम्परा घणी ठावी है। आ जूंझारू जमीं संत, सूरमा अर सतियां रे इतिहास रै मूंडे बोलती पोथी है, धारा तीरथ रो जूनौ धाम है। इणी वास्ते रविन्द्र बाबू , मदनमोहन मालवीय, कर्नल टॉड, ग्रियर्सन, टेस्सीटोरी जेड़ा लूठां लिखारां अंगीज'र इणने बिरदायौ है। इण धाम मांय ई मरू भौम री बेकळू री तपन भी निरवाळी है।

उण टैम राजस्थानी साहित्य में चारण कवियां रो बोलबालौ हो। उणां रे कंठ मांय सरस्वती रौ बासो मानीजतो। बे आपरे आश्रयदाता राजाआं ने कविता सूं रिझावता अर लाख–पसाव, करोड़–पसाव रा मौटा इनामां साथै जागीरी रा गांव पावता। औ उण जुग रौ सांच हो। दूजी जात आळा भी कीं लिखता बिलजरूर हा। पण उणां नै ओ आदर नीं मिळतौ। क्यूंकि बिरदावन मांय चारण नम्बर एक माथै हा। उणांरी पूरी खैप ही। यूं केय सकां कै राजस्थानी साहित्य रै उण जुग मांय इणां रो एकाधिकार हो।

चारण कवियां जकी रचनावां सूं राजस्थानी साहित्य री झोळी भरी है। बे कथ्य संवेदना अर कलात्मकता मांय बैजोड़ है अर डिंगळ शैली री अनूठी मिसाळ है। चारण नीं कोरा कलमकार हा, मौको पड़्या खुद जुद्ध मांय जावता अर तलवार–ढाल हाथ में ले'र लड़ता, पड़ता, आखड़ता। जुद्ध री जीत रे पछै जद पाछा बावड़ता तद बैठ'र आंख्याँ देख्यौ बरणन लिखता, जिणसूं जुद्धां रो सजीव बरणन इणांरी सगळी पोथियां मांय कमोबेश लाधै। राजस्थानी साहित्य मांय चारणां रौ लूंठो योगदान है। आ घणी गुमेज रे सागै अंजीजण वाळी सांतरी बात है। उण टैम चारणां रे साथै–साथै जकी दूजी जातां बिरदावण आळी ही उण मै–राव, भाट, ढाढी, नगारची, ढोली इत्याद घणी महताऊ गिणींजती। इण मध्यजुग मांय मारवाड़ री धरती माथै एक सांतरौ चरित्

व्हियो–राव वीरम। जिण रो बेटो हो राव चूण्डा। राव वीरम रे चरित ने उजागर करण रो बीड़ो उठायौ – मुसलमान कवि बादर ढाढ़ी 'वीरवांण' मांय। पण बादर ढाढ़ी आभिजात्य वर्ग सूं नीं होवण री वजह सूं उणां नै बा ठावी ठौर नी मिळी। कीं एड़ो ईज लेखौ बादर ढाढ़ी री वीरवांण साथै है। आ पूरी तरियां सैंजोड़ जुग री पीड़ भोगे। समीक्षा री जितरी पोथियां इण शोधपरक काम खातर फंफोळी–तो कठेई पांच लाइणा तो कठेई आधो पेज। कोरी सूचणा मिळै – मर्म नीं।

जदकि आ रचना चारण कवियां री वीर रस आळी पोथियां रै सैंजोड़ ऊभी रेवण री पूरी खिमता राखै। इण मांय राजस्थान री मरजाद, सभ्यता, संस्कृति, तद्युगीन परिवेश रा सगळा सुर मिळै। जकी दूजी उण टैम री चारण रचनावां मांय है। कुण नीं जाणै'क मध्य जुग संकीर्ण राष्ट्रीयता रो जुग हो। राजस्थान री हर एक रियासत पड़ौसी खातर लड़ण री हूंस लिया लड़ती–भिड़ती रैवती। इतिहास साक्षी है इण रौ कोई लूंठो ठोस कारण नीं व्हिया करतौ। हिन्दू शासक अर मुसलमाण शासकां रो झगड़ो उण जुग रौ दूजो सांच हो। बैवते खजानै आळे कारवां ने लूट लैवणो, खजानौ पाछौ लेवण खातर प्रतिपक्ष री ओर सूं हमळो बोलणो, सीमा रो विस्तार, शरणागत वत्सलता, राखी बंद भाई रे धरम रो निभाव, लूट खंसोट, घोड़ी मांगणी, मनपसंद चीज नीं मिळी तो खाणै माते दगौ आद किताई विषय है, जका उण जुग री पोथियां मांय जोया लाधै। बादर ढाढ़ी उण जुग रै सांच नै आपरै अेतियासिक प्रबन्ध काव्य 'वीरवांण' मांय उकेरिया जिण सूं आ रचना सवाई गिणीजण री खिमता राखैं क्यूंके बादरढाढी री 'वीरवांण' मांय इण धोरा धरती रै तपन री रूखाळी है। मंडोर रे इतिहास रे उड़ते पानां ने कविता री माळा मांय घटनावां आळे मणियां ने गूंथ पिरोवण री सांतरी खैंचळ है। राजस्थानी साहित्य रे ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्यां मांय 'वीरवांण' ई ठावी ठौड़ री हकदार है।

बादर ढाढ़ी रो जीवन वृतान्त, वीरवांण रो रचनाकाल अर कवि रो स्थान

राजस्थानी साहित्य री वीर रस सूं सराबोर पोथियां मांय 'वीरवांण' री न्यारी निकेवळी ओळखांण है। लिखारो बादर दला जोइयां रे हेठवाळ (आश्रित) कवि हो। जोइयां रे अर वीरमजी राठौड़ रे पेली तो हेत अर पछे छत्तीस रो आंकड़ो जुग चावौ हो। पण बादर ढाढ़ी री महानता इण बात सूं साफ लखावै के उणे जोइयां सूं बैर बांधणिये राव राठौड़ वीरम री बहादुरी नें 'वीरवांण' मांय बरणी। आ पोथी साहित् अर इतिहास री दीठ सूं घणी उल्लेखजोग है।

'वीरवांण' किण टेम लिखीजी अर लिखारो कुण हो ? इण बात नें "मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना" री भावनां सूं विद्वाना अर इतिहासकारां आपरी न्यारी–न्यारी धारणावां प्रगटी है। पण्डित रामकरणजी आसोपा तो इण पोथी रे लिखारे रो नाम "रामचन्दर" लिख्यौ है।[1] जको किणी भांत गळे नीं उतरै, अर ना इज पोथी पढ़ियां पछै मान्यौ जा सकै। क्यूंकि पोथी खुद इणरो अन्तः साक्ष्य दायीं ठौड़–ठौड़ खुलासो करे–

मिलीया दलमै दांनमै मांझी कर सला।
सामा वीरम सारका बण बैठा बला।।
कहां कबीला कुटम घर कहां भाई भला।
बादुर ढाढी बोलिया नीसांणी गला।।
नवगुण पूणा तीन सै, वीरवांण जसवार।
सुध वाचीजो सकवीयां, बाधर कही विचार।।

पोथी यूं तो कवितां मांय प्रबंध रो सांतरौ रूप है पण बीचे कठै–कठैई गद्य रो प्रयोग भी मिळे, ओ प्रयोग लेखक री प्रामाणिकता ने कूंते – ओ गद्यांश इणरी हामळ भरै–

---

1. राजरूपक नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित भूमिका – पृ. 2

"गींदाली री लड़ाईमें झगडा तीन तो रावळ मालदेजी आपरै लोकसुं एकला किया। झगड़ो चोथो भाटी घड़सी रावळजी वीरमदेजी कंवर जगमालजी सोलंषी माधोसिंघजी। पांचमो झगड़ो कंवर जगमालसिंघजी एकलां भूतांरे जोरसै कीइंयां। पांचमां झगड़ा में तीन लाष आदमीं षेत पड़ीया। अठी राठोड़ा रां आदमीं लाष छा जांमासुँ आदमी हजार पचीस षेत पड़ीया माहाराँई झगड़ो हुवो छो। हूं बादर ढाढी जोयारो ही। सो मै पूछने सुणी जिसी हगीगत सूँ वणावट करी। मारी उकत प्रमाणं रावळजी जगमालजी वा कंवरजी रिड़मलजीरै कैणैसूं जस वणांय नै सुणायो। ओ झगड़ो हुवां पछै वरस बीससूँ ओ ग्रन्थ वणायो। जोया वरस पां अठै राठोड़ो कनै रैया। जितै हूं जोया साथे हो से वात सारीसूं वाकब हुवो और वीरमदेजी मधुरे आपसमें फूट पड़ी। झगड़ो हुयनै मारीजिया। धीरदेजी गोगादे की तांई जिती बात सारीसुं मारै आंषीयां आगे हुई। मैं जोइयांरै नंगारै माथै हो। हेते बैर सारो निजराँ देष्यो। पछै धीरदेजी काम आया। जां पछै तेजमाल जोयै मनै कैयो कै बादर सिरदार मारीजियां जिण तरै हुई थे देषी जिसी सारी हगीगत वरण करी। जरां जोइयां राठोड़ां कनै आया। धीरदेजी मारीजिया जिता दिनां मै जो जो वात वो झगड़ो हुवो जिसो वरणो। तिणरी हाजरी जोयांनै साही वाण मै तैजलरे आगै दीनी। राठौड़ां नै सेतरावै मंडोरकेतु में चूंडेजी देवराजजीनै हाजरी दीनी। पछै चूडैजी मंडोवर लीवी जिणरी हगीगत मनै कही। जिण रीत जस बणाय हाजरी दीवी। जा पछै नगर जाय जगमालजी नै वा कंवर रिडमलजी नै हाजरी दीनी। जद पैला झगड़ा हुवा जांसुँ हू वाकब हो। फेर कितीक हगीगत वाँ कही जिण मुजब पछै बणाय ग्रन्थरै आदमै वरण दीनी छै। हु तै झगड़ै मधु वीरमजी रैं वात हुई जकण ठौड़ मैं कैं दीनो छै नला सला नीबडैं सो जाणैं। अलामैं निजरां देखी वा कांना सुणी जिण मुजब सची–सची वरणन करी छे। सो मारे ग्रन्थमें भूल–चूक हुवे तो कवी लोक सुधार लेसी।"

'वीरवांण' रे रचनाकाल खातर मेनारियाजी री टीप है – "इणरो रचनाकाल संवत् 1440 रै लगे–टगै मानै अर बहादुर ढाढ़ी ने राव राठौड़ वीरम रो आश्रित कवि अंगीजै। पण दूजै कानीं 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पोथी मांय लिखै–"कीं लोगां मान लियो है'क आ वीरमजी री समकालीन रचना नी है। हो सके अठारवी सदी रें आदेटे लिखीजी वेला।" पण इण बाबत डॉ. सुकुमार सैन री बात घण महताऊ लखावै–

"It is an anonymous Dhadi composition of the 15th century. It deals with the chivalry of Rao Biramji Rathora, who reigned C.V.S. 1435 (A.D. 1378). The Rao was the patron of the poet."

नरोत्तमदासजी स्वामी आपरी पोथी 'राजस्थानी साहित्य : एक परिचय' मांय इण पोथी री गणना चारण शैली री पोथियां 'रणमल छंद' अर 'अचलदास खीची री वचनिका' जेड़ी पोथियां री अेक कड़ी अंगीजै। इण रा अेलाण अर खूरंट कीं बीकानेर भूप रायसिंघजी रै समकालीन कवि सांद मालारी पोथी 'झूलणा महाराज जयसिंघजी रा' मांय मिळै। आ ओळी 'तेरह तुंगा तड़छीयां मालै सलषाणी' इण भांत मिळै–

दसवाटां तोगां कीया ज्यूं जैत हंवालै
तेरै तूंगा भांजीया ज्यूं रावल मालै।

इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा वीरम री मौत संवत् 1440 मानै। इण में राव वीरम रै दूजे बेटे राव चूंडा रे साथै ईंदो रे मुखियां उगमसी री पोती रो ब्याव अर मंडोर रे दायजै री बात रो सांतरो लेखो है–

करवा सगपण कारणैं उठ इँदा आया
हरष करै हित दाष नै चुंडा परणाया
मंडोवर मुगलां लई ईंदा कहलाया
पडीयारां घर पालटी थिर नाहीं थाया।

चामंड चामंड मुष चवै जैकार जपाया
राज मंडोवर चुंड कुं चामंड जगसाया

वर ले चूंडो सै उगम संग आवै।
मिणधर सूताँ नींदमै चामंड फरमावै।।
वाड़ो करवट जेवड़ा घर घोड़ा आवै।
उगमसी इंदोतनैं पोती परणावै।
मंडोवर दी कर महर माता फरमावे।।

सूतां उठ चूंडेसधर वाड़ा छपवाया।
उण दिन सगपण वासतै उगम फरमाया।।
चामंडरै बरसुं करै अस ओझक आया।
अस रंग बदल्यो ईसरी दूजा दरसाया।।
तद चूंडे चामंडका परचा सच पाया।
चंडी वर हुय चुंडकुं सामांन सजाया।
उगम घास मंगावणा मुगलां फरमाया।
सज भड उगम पांचसै संग चुंडा लाया।।

छळ कींधा बळ दाषीया धर कारण धाया।
हर बळ इदा रांण हुय गाड़ा गरणाया।।
ऐम तळेठी आवीया चूंडे मन भाया।
ऊभां सोबायत अटा निजरां गुजराया।।
सो गाडा उगम सर बगड़ भितर लाया।
चामंड चामंड मुष चवै जैकार जपाया।।
उसरा थांणा उथपे थिर थंनक थाया।
मुगला दोय हजारकुं धोरां घलवाया।।
राज मंडोवर चूंडुं चामंडा बगसाया।।

इदांजी म करजो अवर, पाधर मुगल पछाड़।
दीवी मंडोवर दायजे, चूंडो चंवरी चाड़।।

इतिहास री खोगाळ ने ऊंडे तांई उकेरणियां विद्वान विश्वेश्वरनाथ 'रेऊ' 'मारवाड़ का इतिहास भाग–1' मांय मानै'क मंडोर माथै राव चूंडा रो कब्जो संवत् 1451 में वियो। इण पोथी रे आखरी पन्ना मांय राव वीरम रे बेटे गोगादेव री जोइयां रे साथे हुई मुठभेड़ रो सांतरो बरणन है। इण वास्ते 'रेऊजी ' मानै'क "गोगे रो जलम संवत् 1435 अर मंरण संवत् 1450–60 रे लगै टगै हुयो।

राजस्थानी रा अध्येता डॉ. हीरालाल माहेश्वरी आपरी पोथी 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' मांय इण रचना रो काल संवत् 1500 रे आड़े – पाड़ै मानै। म्हैं इण पोथी ने गहरी दीठ सूं दो–तीन बार बांची–परखी पण बादर ढाढ़ी दूजां लिखांरा दांई कठैई ओ 'अन्तः साक्ष्य' नीं छोडियों जिणसूं सर्वसम्मति रे निर्णय माथै पूग्यो जा सकै कै सांचाणी आ पोथी इण बेळा लिखिज्योड़ी है अर इणरो लिखारो बादर ढाढी ही'ज है। ओ अन्तःसाक्ष्य बिलजरूर तो दो–तीन ठोड़ लाधै। जिण रो लेखो लिरिज्यो है।

इण मारवाड़ रो अलेखूं मानखों इण बात ने तो ठीकसर अंगीजै है'क ढाढी हिंदू अर मुसलमान दोनूं जातियां रा व्है। 'ढोला–मारू' रा दूहा मांय दूत री भूमिका निभावणियां हिंदू जाति रा ढाढ़ी हा। जदकि इण पोथी रो लिखारो – बादर मुसलमान ढाढ़ी रे होवण रा ठावकां अेनाण देवै। केई ठौड़ हिंदुआं रे खातर 'खाफर' सबद रौ उल्लेख मिळे ज्यूं –

"खाफर माल कुरांण कुंलख बैर लखाणी"
"हूं बादर ढाढी जोया रोही सो मैं पूछ नै सुणी जिसी हकीगत सुं बणवट करी।....."

सुणी जिती सारी कहुँ, लहु न झूंठ लगार।
मालजेत जगमालरो, वीरम जुध विचार।।

इण पोथी री प्राचीनता रो जको सवाल है के इण रे नाम 'नीसाणी वीरमजी री', 'नीसाणी वीरमांण री', 'वीरमांण' अर 'वीरमायण' आद केई मिळै, जिण सूं इण रे कथ्य रो इतिहास उळझ्योड़ो लखावै अर रचना री प्रामाणिकता माथे सवालिया निजर उठै। पण पुराणी पोथी होवण रा अेनांण तो उण टेमरी'ज लिखिज्योड़ी राठौड़ा री ख्यातां मांय 'वीरवांण' रा घणकरां दूहा जोयां लाधै। जका धके जावतां लोकोक्ति अर कहावतां दांई लोगां री जुबान माथे चढ़ग्या। ज्यूं –

"पग–पग नेजा पाड़ीया, पग–पग पाड़ी ढ़ाल,
बीबी बूझै षान नै, जोध किता जगमाल ?"

"भुषा तीरसा आपरा, बांधीजै घोड़ा,
ढळीया हत न आवही, गोगा दे घोड़ा।"

"गींदोळी बांधी गळै जगमाल अनाड़ै,
जको न देवै जीवतो, कुण मार लीराड़ै"

हिन्दी रा लूंठा साहित्यकार डॉ. रामकुमार वर्मा आपरी पोथी मांय "ढाढियां री कविता ने चारणां री कविता सूं पुराणी मानै।"[1] इण सगळी बातां ने डंखेरियै पछी जकी दीठ बणै उण सूं बात आ सफीट लागै'क आ पोथी पन्द्रहवें सईकड़ै री'ज है। इण री हामळ उण टेम लोक मांय प्रचलित इण दंत कथा सूं भी व्है – गोगेजी रा उल्टा पांव जुड़णा, कायां रो अमर होवणो अर दसवें सिद्ध रे रूप मांय थरपीजणो अर जालंधरनाथ रे साथै जावण री बात जग चावी वैगी ही।" आ नीसाणी इण बांत ने उकेरे'क गोगोजी रचना लिखीजण सूं पेंली हा। ज्यूं–

"वैर वीरम तणौ वाळयो नीसंष हुय नीडार
हात गोगादेव हुतां धपाई रत धार
तो रतधार जी रतधार धापी रळतळी रतधार
कटे उदल दलो कंटोयौ धीर है सुं वैर
वैर वीरम तणो वाळे वाळजै इम वैर
तो इम वैर जी इम वैर गोगै वाळीयो इम वैर।"

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास

सार रूप मांय केयौ जा सकै है'क इण लिखारै रो फकत नाम मिळै मां–बाप रौ ठाह नी पड़ै। जलम री तारीख रौ अंदाज नीकळै। इतरो ईज नीं जुद्धां री तारीखां रो तुलनात्मक मैळ करण सूं 'वीरवांण' रै रचनाकाळ रौ अंदाज बैठै। जकै रो जिकर पेला करीजगो है। आ बात पाछी इण वास्ते करी है'क 'वीरवांण' बादर ढाढ़ी री लिखियोड़ी एक ईज पोथी मिळै। उण में ई कठेई अन्तः साक्ष्य रो संकेत नी मिळै। एक बात 'वीरवांण' घणीं बार पढ़ियां पछै बिलजरूर लागी'क हिन्दी जगत मांय चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' 'उसने कहा था' एक कहाणी रे हिसाब सूं जग चावा व्हिया। ठीक उणीं भांत 'वीरवांण' भी इणी आदर री बाट जौवती लखावै। आ बात लिखण रो भी मोटो कारण औ है'क बादर ढाढी खुद घोषणा करै'क "म्हूं जोइयां रो ढाढ़ी हूँ" अर बरणन करै राव वीरम रौ। क्यूंके ओ संसार 'जके री खावै बाजरी उणरी बजावै हाजरी' आळे जीवण सत्य री धरां सूं उपर उठ एक लूंठै अर अंगीजण जोग आदर्श ने थरपियौ। इण बात सूं बादर ढाढ़ी रौ तत्युगीन रचनाकारां मांय ओहदो घणों महताऊ अर उल्लेख जोग लखावै।

वीरवांण–मीमांसा कथ्य, शिल्प अर संवेदना री दीठ सूं

'वीरवांण' रे कथ्य अर शिल्प रे ऐतिहासिक मूल्यांकन अर काव्य सौन्दर्य रे निरूपण री बात है तो इण पोथी रे कथानक मांय इतिहास ने रोचक ढंग सूं अभिव्यक्ति मिळी है। आ वीररस री सबळ, सजीव अर फड़कती रचना है। कथानक इण भांत है–

अथ ग्रंथ वीरवांण ढाढी बादरो वणायो लिषंते।
रावजी श्री सलषेजीरा कंवराँ च्यारांरा परवाड़ा लिषंते।

सुमत समापो सारदा, आपो उकती आप।
कमंधा जस वरनन करूं, तुझ महर परताप।।

समरूं गणपत सरसती, पाण जोड़ लग पाय।
गाउं हु सलषाणीयां, विध विध सुजस बणाय।।
सुणी जिती सारी कहुं, लहुं न झूंठ लिगार।
मालजैत जगमालरो, वीरम जुध विचार।।

राज समालो नगरमै, सोभत जैत समीयांण।

गळाई पेली मंगलाचरण अर पछै कथानक रो लेखो लिखिज्यो।

राव सलखा रे चार बेटा हा। मल्लीनाथजी, जैतमालजी, वीरमजी अर चौभीतजी। जका ऐक सूं एक भिड़किंवाड़ हा। जिण रो बरणन बादर ढाढ़ी इण भात करियो –

सुत च्यारूं सलषेसरा कुलमै किरणाला।
राजस बंका राठबड वरवीर बडाला ।।
साथलियां दल सामठा वीरदाँ रूखवाला।
भिडिया भारत भीमसा दल पारथ वाळा।।

देस दसु दीस दाबिया कीदा धकचाळा।
केवि धस गीर कंदरा वपसंक बड़ाळा।।

राव सलखा रे दूजे नम्बर रे बेटे जैतमालजी जद गुजरात माथै हमलो बोल्यौ, उण बगत अखा अर नंदा राड़धरै सूं आया हा। भाइयां रै लाख मना करियां पछै भी गोठ खातर डुळग्या। दारू–मांस रे हबोळे चढ़ग्या अर नशे में जैतमालजी रे हाथ मौत रे घाट उतरग्या। जिण सूं उणारे राज आळो राड़धरौ अर हुकुमत आळा सगळा गांव हाथ सूं निकळग्या। जिण रो लेखो कविता पछै इणी पोथी मांय गद्य मांय इण भांत मिळै–

"इण रीत रावल मालदेजी गुडै नगर राज करै जकां दिनाँ समाधंणैसुं रावल जैतसीजी इडर गुजरातने चडीया। जाय राडधडै उतरीया। जठै अषैनंदै दोनुं कोटड़ीया जाय राड़रै पंमारांनै आदमी बांवनसुं मारनै राडधरौ लीनौ तैरी राड़ संपूरण।"

सलखा रै मोबी बेटो हो मल्लीनाथ। उण रौ राज हो – नागर रे मणियड़ परगने में। मणियड़ रा घोड़ा जगचावा हा। एक बार मांडू रे बादशाह बेगड़ा आपरे पठाण मरवण खान ने घोड़ा लावण खातर मणियड़ भेज्या। इण पठाणा जा'र भिरड़कोट शहर रै ताळाब सिणलागर री पाळ मातै डेरो डाल्यौ। उण दिन जोग एड़ो पीनो'क लुगायां रै कोड़ रो तिंवार "सावणियां री तीज' उणी दिन ही। तीज री जूंनी परम्परा है – ताळाब रै पाळ माथै हिंडो हिंडण री। तिजणियां आभै री बिजली दांई बणी–ठंणी गणगौर बण पाळ मांथै हिंडो हिंडण आई तो मुसलमांण सैनिकां रे मुंडै लार पड़ी। उणां नै तिजणियां दांय आयगी। दांय क्यूं नी आवै वै तो रूप री खजानो ही। कवि लिखै –

"तीजणियां दिन तीजरै, सजे साज सिणगार।
हीडे आई हींडबां, अपछरै उणियार।।"

"अरक तणो पण आथमण, मेह अंधारी रात।
तीजणीयां लेगा तुरक, घोड़ां ऊपर घात ।।"

पठाण अर उण रा साथियां तो घोड़ा खरीदण आळी बात नै लांपो दे – बै तो दड़ीदौट घोड़े दीठ अेक – अेक तीजणी ले उड़ग्या। जकौ ठेठ मांडू जाय'र सांस लीनी। इण अणहूंत घटना री जद मल्लीनाथजी नै ठाह पड़ी। तद उणां रे बेटे जगमालजी 140 घुडसवार ले'र लारै काटक्या, पण लुटेरा हाथ नी लाग्या। अबै करै तो कांई ? उणां रे एक आज आळी तरकीब सूझी – बे मौके री तलाश मांय बादशाह रे क़िले मांय चाकर बण ग्या। सगळी तिजणिंया बादशाह री लाडळी बेटी गिंदोली री हाजरी मांय ही। ईद रो दिन

आयो, गींदोली उण तिजणियों रै लवाजमे साथै किले सूं बारै आई। जगमालजी मौके रो फायदो उठा'य गींदोली रो अपहरण कर सगळी तिजणियां ने पाछी लै भिरड़कोट नेड़ो करयौ। बदलो सांतरौ लेइजग्यो–

ऐ तीजणीयां एकठी आई आपांणी।
सजो सुभटां सूरमां किम जेज करांणी।।
आ कहतां भड़ उठीया वीरा दवी रांणी।
ज्युं मृग डार ज ऊपरै चीता मलफांणी।
तुरंगा चाढी तीजण्यां हुब कुक हुवांणी।
सापूत बेटी साहरी जगमालै जांणी।।
गींदोली करसुं ग्रहे हय पीठी चढ़ाणी।
लेगो ज्युहीं लावीयो जगमाल मांलाणी।।

मांडू रे बादशाह आपरी बेटी गींदोली नै पाछी मांगी अर बदळै में जूनागढ़ देवण री बात करी। जगमालजी ने आ बात घणी आकरी लागी। बै भंवेई नी मान्या। जके खातर दिल्ली रो बादशाह गौरी अर मांडू रो सुल्तान दौनूं री भेळप सैना ले'र भिरड़कोट माथै हमलो करियौ– मल्लीनाथ पेले झटकै मांय दोन्युं नै धूळ चटायदी। दूजौ अफाळौ ई हार नीं टाल सक्यो। तीजी लूंठी भिड़ंत मांय राजपूतां रौ साथ भूतां दियो। क्यूंके भूतां मांय जगमालजी परण्यां अर वचनबद्ध हा। इण तीजी लड़ाई री आ निसांणी ही–

"आलण कुंपो अथ वहै जाता जैसाणै।
रिण मायां भूतां रची, तंवर तेजल आंणै।।
आलणकुं तेजल कयो मासी सुत जांणै।
मै रिणमैं अवगत गया धि भोजन षांणै।।
आलण बेटी आपरी तू रिणमैं आंणै।
कंवर प्रणावो कुंपकुं जग सारो जाणै।।
धि चंवरी लागां धुवों सुरलोक पयांणै।
कुंपैकु आलणी कही अगल मुष आंणै।।
कमधज परणी कूपसीं आलण, धि आंणै।
दीदो भूतां दायजो कवलो केकांणै।।
फतेजीत वाजो दियो षांडो षुरसांणै।
अकथ कुंपैरी इसी जग मालो जांणै।
वीरारै वचनां तणो आयो अवसांणै।।

अभंग नगारो अपीयो, अरि गज षाग उचेट।
कुंपानै अस कवलीयो, भूतां कीदो भेट ।।

वीरां जद दीनो वचन, हतलेवो छुटकार।
याद करो जद आपरै, हाजर वीस हजार।।

कुंप कंवर विदा कियो, पांण जोड़ कर प्रीत।
दीनों भूतां दायजो, कुळमें राषण रीत।।

भीरड़ कोट दळ भेळसी, हणसी हांतां हुत।
आडा किण दिन आवसी, भीडज कवलींयो भूत।।

इण जुद्ध मांय मुसलमांन सैना हाय–तौबा कर खींडगी – कीं गुजरात कानीं नाठगी – क्यूंकै

गींदोली बांकी गळै जगमाल अनाड़ै।
जको न देवै जीवतो, कुण मार लै राड़ै।।

तीन लाष जुध मैत दिन, घोरा जवन चलाय।
जुध जीत्यो जगमालदे, लीधो माल बधाय।।
पग पग नेजा पाड़ीया, पग पग पाड़ी ढाल।
बीबी बुजै षांनने जोध किता जगमाल।।

इण रै पछै बादर ढाढ़ी 'वीरवांण' मांय बरणन करै – जोइयां मुसलमानां रो। जकां सिंध मांय रैवता इण जोइयां गुजरात रे बादशाह महमूद रै खजानै री चार सौ करोड़ मौहरों लूट काड़ी। पछै डर मायो नीं भिड़न्त रो तो लूट रौ माल लै राव वीरम री शरण मांय आयग्या–

मैंमंद नै जगमाल रै, जबर बैर ओजांण।
आया सरणै जोहियां, सिंध छोडै साहिबांण।।

दिल्ली रो बादशाह जद राव वीरम माथै जोइयां नै शरण देवण सूं काटका पीटण लागौ अर हमलो बोल्यौ। इण भिडन्त मांय सुलताण री सैना ने हार मानणी पड़ी। इण भात राव वीरम री बहादुरी सूं जोइयां री रक्षा व्हियी। जोइयां राव वीरम रे अहसान नीचे दबग्या अर उठै कई बरस तक रिया। जिण री हामळ भरै आ निसांणी –

सिंध दिली सुरतांणरी फोजां चढ़ आई।
सांपो दलो जाइयो भड़ सातों भाई।।

वीरम बोल्यों बीरवर बंको बरदाई।
दूं माथो नह दूं दलो वर घर सिर जाई।।
एण जबानी ऊपरां कमरां कसवाई।
बीडंगा चढीयां वीरवर समसेर समाई।
केता दुसमण काट कर फोजाँ फिरवाई।।
मीर केई रिण मारीया वीरम वरदाई।।
आई न जोयां ऊपरै तिल एक तवाई।।

वीरम मालै वीरवर, अरिहण दिया उठाय।
सरब फोज पतसाहरी, पाछी गी पिछताय।।

जोइयां रे अठै रैवण सूं अर हेत प्रेम बढ़ण सूं वीरमजी री रांणी मांगलयाणी जोइयां रो बड़ौ भाई दला ने (राखीबंद भाई) बणा काड्यो। इण राखड़ी डोरे री टेम भाई बहन नै 700 मोहरां अर तीस बेस दीनां। अे ओळ्यां इण री साख भरै–

मांगलियाणीसुं दलो भलहो धूम भाई।
सात पोंसाषां सातसो मोहरां गुजराई।।
बेस किसुंमां सुंवणै भूषा सिपवाई।।
आया सरणै आपरै ओडी उतराई।
दलै कयो इण देसमै बैसां मै बाई।
वीरमरा मै सांपरत सह कोय सिपाई।।
अरज करो थे आपसुं मो जाणै भाई।
रावल सरणै राषसी बंको बरदाई।।

मांगलीयाणी मोढ मन, पायो जोयो पीर।
दलों, मदु, देपालदे, सांतुं वीर सधीर।।

इतरो होवण रै पछै भी जोइयां जगमालजी सूं डरता। वीरमजी नै जद इण बात रौ ठाह पड्यो, जद उणा नै अभयदान दियो। अर जोइयां अबखी मांय आडा आवण री बात रो कवल करियो। जिण रो लेखो अे दूहा भरै –

मारो काको जैतमल, आप तणी की आस।
मांनै तो जगमालरो, मुळ नहीं वैसास।।

दस हजार जोया दुझल, षरची घररी षाय।
आडा आसी आपरै, अबषी विरींया मांय।।

मांगलीयाणी महलरी, धीर म मानी बात।
जरां ढबाया जोइया, सुष पायो सब साथ।।

मुजरो रावल मालसुं, वीरम दियो कराय।
माल कैयो इण मुलकमैं, बसो षान थे आय।।

दलो रहै दरबार मैं, जोयो आठूं जाम।
जंगा मझ भिडीयां जवन, कोढै मोटा कांम।।

तलवाड़ै थाणौ तठै, पमंग रहै सो पांच।
माल धणी घर मायनै, आवण दिये न आंच।।

पण इणा रे हेतरे तळाब मांय अचाणचक एक भाटो पडग्यो जिण सूं तळाब लहरां रै हिलौरे चढ़ग्यौ। बात यूं व्ही कै मल्लीनाथजी नै एक घोड़ी री बछेरी दाय आयगी। उणां जवाद नाम री घोड़ी री बछेरी समाद नै जोइयां सूं मांगी। इण रै बदळे मांय दस हजार री रकम, दस घोड़ा अर सिणली नाम रो आधो गांव देवण री बात व्ही। पण घोड़ी रौ मालक मदु जोइयो नी मान्यौ।

मलीनाथ मांगी मुषां, साकुर माले समाध।
जकां न दीधी जोहियां, उणसुं वधी उपाध।।

जद मल्लीनाथजी छळ करियो इणांनै दावत रौ न्यूतौ दियो। पण एक पाळ्योड़ी माळण ओ भेद खोल काड्यो–

मालणनै नितरी मोहर, दलो दिरातो दान।
चूक तणी चरचा चली, आई मालण कांन।।
जद उण मालण जाणीयो, दले दियो बहुदान।
सीलूं उंणरो सीलणो, कथ आ घालूं कान।।
डिगती डिगती डोकरी, पूगी दलै पास।
दला चूक तो पर दुझल, नास सके तो नास।।
तलवाडै थाणे तठै, सोवै बंदव सात।
वीरा थां पर बाजसी, रूंक झड़ी अध रात।।

ओ भेद प्रकटतां ई जोइयां तो दड़ीदौट पगरखियां ले हाथां मे'र तैंतीसा मनाया जको ठेठ खेड़ मायं वीरमजी रै दरबार मैं जांय हाजरी दीनी –

कुसले षेमे काढीया, जोइयांने धण जांण।
जोइया पर वीरम जबर, रोकीया अवसाण।।

दलो षेड़ पूगो दुझल, हमै न आवै हात।
जद धिकीयो जगमालदे, भिडवा कज भारात।।

वीरमजी जोइयां ने सही सलामत सिंध पूगा दिया। जिणसूं अे लोग वीरमजी रा घणां अेसानमंद व्हिया। मारग मांय वीरमजी अर जगमालजी रों एक जुद्ध व्हियो पण वीरमजी लूंठा निवड़्या। सिंध रे मारग मांय पड़ते आसायज राजपूतां रे गांव भावा माथै कब्जो करियो अर कुंडल रै भाटियां रे अठै तोरण बांध्यो। इण भटियाणी री कोख सूं इज गोगोजी ई जनमिया हा।

जोइयां पोहचावण ज दिन उमंग मन आणी।
देषण भाडंगनेर दिस पोह कीध पलांणी।।
कुंडल वीरमदे कमंध परणे भठीयाणी।
नर गोगादे नेमीयो जग साष जपांणी।।
रचे हगांमा राग रंच रिण तुर रूड़ाया।
दान हजारां दरब दै बध रीत सवाया।।
इम जोईयां घर आवीया भूपत मन भाया।
उदड. मोतीयां थाळ भर वीरम वधवाया।
कर उछब घर घर कितां गुण मंगळ गाया।।

पांनां फूलांमैं प्रकट, दलो पुगावै देस।
आयो वीरम आपरै, नाहर थाहर नेस।।

वीरमजी जोइयां ने पूगाय भटियाणी रे सागै जद खेड बावड़्या तद रीस खायोड़ा जगमालजी सूं पाछौ बाथेड़ौ करणौ पड़्यो।

मल्लीनाथजी काके भतीजे री इण राड नै खतम करण खातर वीरमजी ने जांगळू जावण रो हुकम दियो। वठै भी वीरमजी लूट खसोट करण लाग्या। दिल्ली रे बादशाह कुतुबुद्दीन ने ई नीं बख्शियो। जथा –

ऊँटां तीसां ऊपरै असरफीयां आवै।
सो मेली पतसाह के जोगणपुर जावै।।
पैसकसी पतसाहरै पतसाह पुगावै।
मिलीया वीरम मारगां अस लीधां आवै।
सब मोहरां पतसाहरी लुटे लीवरावै।
सांमल हुय सारा सुभट मींया फरमावै।।
ओ धन वीरम आपरै घरमैं नहं मावै।
वीरम औ भख बाघरो पोह केम पड़ावै।।

Indian ... 115827 10/11/04.

इण भांत मोहरां लूट ली। जिणरो नतीजो ओ निकळ्यो के दिल्ली रे बादशाह री निजर मांय खेड़ अर मंडोर खटकण लागी। जोरदार जुद्ध हुयो। अे ओळियां इण री साख भरै–

चढ़ घोड़ा भड़ चालीया रज गेण ढकाय।
मिलीया भारत जांगलु अध रतरा आया।।
मीर केई रीण मारीया मदु मन चाया।
काट कटकां काढ़ीयां खल खेंग खपाया।।
हुर अपछर हरष अत सुरां बर पाया।
ग्रीधण साकण जोगणी पल पूरा षाया।।
वीरम छोडे जांगलु साहीयांण सिधाया।।
सज जुध जोया सांषला वीरम बचवाया।।
जद पीछा तठ पातसा धर अपणी धाया।
दल जी कोसां दोय तक सामे ले आया।।
सजे उमंग साहिवाण मैं वीरम व्रध वाया।
दीध बधाई राइकां जद गोगा जाया।।
एक महीनो आठ दिन थठ गोठां थायां।
बैरो लष रहवास कुंदलजी दरधाया।।
बांरा गाम ज बगसीया चिता वीरम चाया।
डांण वले उचका दिया आधा अपणाया।।
धाडै धन धुर माझीया मांझी वैमाया।
वीरमकुं देवण बलै लष वैरे लाया।।

इण जुद्ध सूं राव वीरमरी स्थिति घणी लूंठी व्हेगी। कवि मानै'क

लष वैरे पैदा सलष, सषरी आवै साष।
साषांरा उपजै सद्रा, लेषे रिपीया लाष।।

पण राठौड़ वीरम रोज–रोज रे कजिये सूं काठो धापगौ अर पांणी आड़ी पाळ री भावना सूं जोइयां रे गांव जावण री तेवड़ली। आखिरकार जोइयां रे जो दुक्यो तद राव वीरम नै बारा गांव अर मोकळी इज्जत बगसी। अठै ध्यान देवण री बात आ है'क जोइयां अर वीरम रे बीचै विग्रह रा बीज पड़ण लाग्या हा।

अठै वीरम री मत ऊंधी व्हेगी ही। जोइयां सूं माडांणी झगड़ों मांड्यो –

दीठी वीरम हेक दिन पीती सर पांणी।
वीरमरै सब सांढीयां निजरां गुजराणी।।

वीरम चित विटाळिया ऊंधी मत आणी।
सात हजारूं सांढीया दिन हेक दगांणी।।
आयर जिणरी ओठीयां कल कुकरांणी।
दस हजार चढ़ीया दुझळ रज गैण ढकांणी।
मारे वीरम मेटसां करसां तुरकांणी।।
लष वैरे वीरम लियै सांढ्यां आंपांणी।
दोय कोसां पूगो दलो लारै लुणीयांणी।।
मानों मानों मारकां सचो सलषाणी।
मलिनाथ जगमालसुं तिण किसड़ी तांणी।।
आप तणी धर छोड़के आयो आपांणी।
आंपां मारण उठीया लष कोट लगांणी।।

जोइयां सूं अठै उणा एक नुंवी चाल चली। पूगल रे भाटी बूकण री बेटी कश्मीरदे रो ब्याव मदुजोइये रे साथै व्हियो। उण री नेनकड़ी बैन सूं मदु रो नेन्हो भाई जसू परणीजणी चावतो हो। पण कश्मीरदे उण रो ब्याव किणी बहादुर हिन्दूं सूं करणी चावती ही। इण खातर राव वीरम वर रूप मांय चुणिजियो जिण रो वरणन ओ है –

बुकणरै दोय बेटीयां गत एक नीहालै।
नाम बड़ी कसमीदे परणो देपालै।।
रांनल कंवरी राजवण अभ अछरां गालै।
सो मांगी देवराज युं कर जोड़ हतालै।।
रांनल मुझकुं रजवण भाभी परणालै।
भावज गुण भूलां नहीं ध्रंम षोड़ विचालै।।
कहीयो जद कसमीरदे चढ़ क्रोध अचालै।
हुं परणांसु हिंदवां तुंरकं हरटालै।
सो कुछ हिंदु हम सुणां जिसकुं परणालै।
परणांसुं सगपण करै वीम विगतालै।।
जद पाछो कहीदो जसु आगम अषतालै।
मानै भाभी माहरो वायक सि मालै।।
बैठी रोसै बापनै कर मुंडे कालै।

राव वीरम तो नी आव देख्यो नी ताव। उणीं तो ब्याव करते ही ससुराल रा सुसरोजी अर उणां रे परवार नै हेमाळय पूगा दिया अर जबरी लूटपाट करी। जोइयां ने इण अणहूत घटना सूं मोकळो धक्को लाग्यो। जिणरो वरणन इण भांत है–

चारण चारण कुकतां आरण जगांण।
बामण भुरी बासता सिर आप दिरांण।।
भागा मुंडा भाठदां षुल दांत षिराण।
डोफा भागा डुलड़ा झाटक झेरांण।।
कटिया हात कमीणदा दत नेग दिरांण।
गहणा गायणीयां तणां लुटे लिवराणां।।
केतां पावज कटी हातां हेरांण।
जावै गुणीयण जीव लेकर षांचा तांणा।।
ठांवां पंथ विच एकठां मिल ठाक घतांण।
फिर कोई इसड़ा ज्याग मै मत पाव दिरांण।।
सलषांणी जिसड़ा सुपह वनड़ वरवांण।
बुकणका घर षोदकै धन सोध लिरांण।।
बुकण सहतां बेलीयां इक षाड़ दिराणं।
भटीयाणींदै भागका क्या चक्र फिरांण।।
कह भाटी कसमीर कुंक्या फाग षिलांण।

इतरो होवण रै पछै भी दले जोइये तो घणो ई मिंनखपणो राख्यो, घणी समझाइस करी, आपरे प्रधान नै वीरमजी हाजरी मांय भेजियो –

दलैषान विचार कर परधांन पठाया।
लष वरै वीरम कनै ए जाव कैवाया।।
तगड़ तषी षग झार सैभंग वीरम आया।
आया कुं आदर दिया हम लीध वधाया।।
लख वेरो रहवास कुंदलजी दरवाया।
धरती चोबी गामंड़ सब राज समाया।।
उस मांसुं वीरम तनै आधा बगसाया।
डांण चलै उचका दिया आदा अपणाया।।
चोबी गाम चबुतरा कि काज बैठाया।
पोसे इकसठ पाजरू सफरै राषाया।।
जोइया पग मांडे जिती धरे नीही रहाया।
हाती रहै न जुटिया कैहर उकराया।।
मीलीयां चिडीया महलै अहि जाणक आया।
जांणक डोकर षोलडै विच बाद्य बसाया।।
क्या तेरा अवगुण किया हम लीध नीभाया।
षायर दुगुण कियां सब जाय भुलाया।।

राव वीरम जोइया सूं उड़तो तीर लेवण खातर नुवा–नुवा हथकंडा अपणावण लाग्यो। एक दिन तळाब माथै जोइया रे सांयढिया रो टोळो पांणी पीवतो देख्यौ तो उण नै कुचमाद सूझी। उर्णी आपरै आदमियां ने हुकम दीनो क इण सांयढियां रे राठौड़ा रो खेंग लगाय दो। जिण सूं अे सांयढियां आपणी हो जासी। आ बात जोइया ने खारी जैर व्हे जूं लागी। जथा –

दीठी वीरम हेक दिन सर पांणी।
वीरम रै सब सांढीयां निजरा गुजराणी।।
वीरम चित विटालिया ऊंधी मत आणी।
सात हजारूं सांढीयां दिन हेक दगांणी।।
आयर जिणरी ओठीयां कल कुकरांणी।
दस हजार चढीया दुझल रज गैण ढकांणी।।
मारै वीरम मेटसां करसां तुरकांणी।
लष वैरे वीरम लियै सांढ्यां आपाणी।।
दोय कोसां पूगो दलो लारो लुणीयांणी।
मानों मानो मारकां सचो सलषाणी।।
मलिनाथ जगमाल सुं तिण मिसड़ी तांणी।
आप तणी घर छोड़के आयो आपाणी।।
आंपां मारण उर्ठीया लष कोट लगांणी।

रांणी मांगलीयाणी घणी कोशिश करी क जोइया अर राव वीरम रै बीचै आपस मांय जुद्ध नीं व्है पण होवणहार ने कुण टाळै। ढळती ढाळ अर दोड़ण रो मतो। दोनुंई तीड़े–बीड़े। जिण सूं परिणाम कीं नी निकळयो। कीं आग बूझती पण राव वीरम तो जोइयां रे लारै हाथ धो र पड़ग्यो। राव वीरम तो कब्रिस्तान री धरां माथै ऊबै टणकैल फरास जको धरम रो रूंख गिणीजै। उणने काट र ढोल बणाय, डूंड़ी पिटवाय दी। इण घटना रो वरणन कवि बादर महताऊँ ढंग सूं करियो–

दरषत हरीपल पीरदां विच दरगह सोवै।
जोइया देस वीदेस मै जिण सांमो जोवै।।
पीर प्रचाइल प्रगट दुष दालद षौवै।
राम रहिम जु एक है। कबु दोय न होवै।।
वीर फरासा बाढ़ बाढ़ बषाती ढ़ोबै।
के मुलां तागा करै हुब हाका होवै।।

इण पेड रे कटण सूं दले जोइया रै अंतस मांय सांतरी पीड़ व्ही। उण आपरो एतराज दरज करायो, पण वीरम तो राठौड़ी मांय अकड़बम (युद्धवीर) व्हियोड़ो सुणैई'ज नीं। तो जोइयां ई जा'र वीरम री गायां घेर ली –

जेज न कीधी जोइयां, घेरी जायर गाय।
सुण बीरम ग्वालां सबद, लागी उर मै लाय।।
दस हजार जोया दुझल, कठठ सारा कोट।
ढालां जंगा चालणा, ढाला करै न ठोट।।

राव वीरम तो जाणै लड़ाई रो मौको ही ढूंढतो हो। कागला रे बैठणो अर डाळ रो टूटणो व्हे ज्यूं राव वीरम नै सेना ले'र रवाना होवण री सूझी। पण मांगलीयाणी समझाइश करी। जुद्ध ना करो। गायां पाछी मिळ जासी–

मांगलीयाणी सांषली धण ऊभी पलै।
रहज्या नाहर वरजीयौ सुण मेरी गलै।।
आज पड पण आपरै धन लीधे दलै।
जो फरहासन बाडतो कलकी थुहलै।।

फीर वीरमकुं आंषीयो कही मांगलीयाणी।
जे तुं ठाकर सलषीयांण ए भी लुणीयांणी।।
दलो अवगुण दाटवै गुण आदु जांणी।
दुष पायो धायो दलो तद इतरी तांणी।।
कहीयो कमधज रीस कर रहजा अब रांणी।
पण नेम जब दीयो पीवण मुष पांणी।।
रावत सारा रीसमै जम रूठा जांणी।
धन नह जासी घाडमै ऊभां सलषांणी।।

उस वीरम एठ कर होकार दराई।
साज मंडाया सांकुरां कमरां बंदवाइ।।
कमधज ससतर भीड कर समसेर संमाई।
सांणीकुं कहीयो सरस है बरस झवाई।।
आ फुले उमंदा अंगा अडपाई।
बोह तब थीटे बेलीयां मनवार कराई।।
विध विध कर मन वेठीयो षिम षुन किताई।
भारतमैं रहजो भला कथ रषां काई।
मांगलीयाणी पालबा इतरै फिर आई।।

गुना अनेकां जारीयां दलै सिपवाई।
एक गुनो दिन आजरो बगसो वरदाई।।
मुझ तणी कंथ मानकै ठहरो ठुकराई।
ए सब गायां आपरी बिगड़ै नह काई।
दलो सवारे देवसी लष वेरै लाई।।
हं पण कागद मोकलुं है महारो भाई।।

राव वीरम तो टस सूं मस नी व्हियो। कुण के'र किणरी बात ? आज कच्ची खायली तो राठौड़ी मांय दाग लाग जावैला। हूं इतिहास रै पानां मांय कायर गिणीजूंला। जको मनै मंजूर कोनी। उणा तो कयो–

फणधर छाडे फुणंद सुं नह भारत संभावै।
अरक पिछम दिस उगवै, विध वेद बीलावै।।
वेग घटे विहंगसे को सिव ध्यान भुलावै।
गोरष भुलै ग्यानं कुं जत लिछमण जावै।।
सत छाड़ै सीता सती हणमंत घबरावै।
घणीयां धाड़ेता तणी कि सबरां पावै।
हुं संक कर वैसुं परे, जग उलटो जावै।।

राणी खपली पण गरज नीं सरी। उण रा दो हजार लड़ाक घोड़ो माथै सवार व्हे गिया। आ बैल म्हने मार। माडेई मौत ने हेला करै, बापड़ो यमराज कांई करै–

रांणी पाणी राळीयो अंषीया अणपारी
वरजै चढ़तां वीरमो ग्रह चाळप चारी
रह रह ठाकुर समझ उर सुणीयै गल मारो
जो फरहास न बाढ़ता टळ जाती सारी
सांणी करी समाध कुं तद वैग तयारी
पाव रकेबां परठकै कीधी असवारी
दोय सहंस चढीया दुझल पमंगां पषराळा
वीर समाध कुदाड़वै झल साबळ झाळा
आज न छोड़ां एक ही विच षेत वडाला
त्रापै त्रापै आवीया मोहील मतवाळा।

जोइयां ने राव वीरम रे कीरत रा कमठांण रो पूरो ठाह हो। **पण लड़ण** री हंस बढती'ज गी

लोप भवंर गीर लंकरो कुण जावै बारै
आभ भुजां कुण ओठमैं कुंण सायर जारै
मीणधर दे मुष अंगळी मीण कवण लीवारै
सिंह पटा झर सांमहो कुण पेट पधारै
तेरू कुण सायर तीरै जमकुं कुण मारै ?
वाद करे रीण वीरमो नर कौण वकारै
मधु तो विन मार का कुण आसंग धारै
ऐ राठोहड़ आजरा पोरस अणपारै
दसां हजारां दोटसी हय दोय हजारै
मत धडषो दाषे मधु दै साहीब सारै
राठौड़ा रिण रीठसां दे धीठ अकारै
जळ चाढां कुळ जोइयां कथ राषां लारै
बाथ घलां असमांण सुं लज हात अलारे।
भळ भळ वाढ भळकीया षुरसांण दुधारा
झबर कसेळां आग झड उर फुट अफारा
पड़ीया असभड पाषती धड़ न्यारा न्यारा
जांण क आय चोगानं मै। ढळीया विणजारा।

मांगलीया अरू सांषंला भिडिया जुध भारा।
सोलंषी चायल सरब बांनै तब रारा।।
नायक विदर नगारची कर समर करारा।
वीरमरा जुध बीचमै तुटा जिम तारा।

धनंष चढाया पुनीयै षुरसांण चौहटी।
तन फोडे तरगस गया ज्यू बीज झपटी।।
ढह पड़ीयो देपालदे धरलणी चोटी।
परगट कीधी पनीये रजपूतां रोटी।।

राठौडां अरू जोइयां कलाम चकरारी।
वीरम मदु पोढ़ीया सझ षाग दुधारी।।
च्यार सहस पड़ सुरमा भुज चिरदां भारी।
साषां सारी सोह चढ साषो धर सारी

अंग वीरमरै ओपीया, घाव एक सो दोय।
अंग मदुरै उपरा, गिणती चढै न कोय।।

इण भांत राव वीरम अर मदु जोइयो दोनूं खेत रह्या। इण पछै इण जुद्ध में काम आवणयां वीरां री विगत कविता में इण भांत उकेरी–

पडीया वीरम पाषती संग इतरा सुरा।
सोलंषी माधो सुभट षडषेत सनुंरां।।
पडीयो चायल सैसमल षल कर भष भूरा।
भीम पडै रिण सांषलो तन कर चक चूरा।।
दोलो पड़ मोयल दुझल षत्रवट वट षोर।
हजूरी वनी पड़े दोयण दल दोर।।
पडीयो आहेड़ पनो झडीयो पग झोर।
सांणी पड़ पांणक सुभट कीर मर तन कोर।।
मांगलीयो मगलो पडै जग सारौ जाणै।
सहंस दोय पड सूरमा पाषर हय पांणै।।
वीरम संग वीठीया बिहद तद ऊंची ताणै।
अछरां वर पोहता इता श्रग बैठ बिमाणें।।

सोडा हाडा सिसोदा, पडझाला अरू गोड़।
चावड़ा तुर चवांण, रिण पड़ीया राठोड़।।

जोइयां कानीं सूं जुद्ध मांय काम आया जोद्धावां रो लेखो इण भांत है–

जसु रिण में जुझीयों कर जोस हमला।
मदु जैल रिण रहे झड तेगा झला।।
घट फूटा देपालदा घुडले वर धला।
दोय सहंस जोया दुझल हुरां संग हला।।
चढीया डोली चारसै गिरणै गलबला।
सब आया साही बांणमें कर अला अला।।
दलो कहै मैं वरजीय मानी नर कोई।
वीरमसुं जुध बाजनैं सब सेन कराई।।
मारे वीरम रिण मुवा भड़ च्यारूं भाई।
धूड़ बलोइण धाडनै जो कीधी से पाई।।

इण जुद्ध री लाय मांय दले रा चार भाई भेंट चढग्या पण जोइया जीतग्या। जीत रै पछै आपरै गांव सहवाण पाछा पूग्या। राव वीरम सूं राखड़ी डोरे रे पाण दलो इण जुद्ध सूं अणूंतौ दुखी व्हेग्यो। अठी ने जावै तो खाई उठीनै जावै तो बेरो। वीरम री वीरगती सूं दलो जोइयां हिलग्यो। पण दले राव

वीरम री पुराणी प्रीत अर मदद ने याद कर उण रै बेटे चूंडे अर रनिवास ने बाइज्जत थळी मांय आयोड़े गावं कळाऊ मांय रेवण वाळै आला चारण कनै पूगा दिया–

दलै बिगड़ी देखने की जेज न काई।
तेजल संग दे मेलीया चूंडो अरू बाई।।
दोय दीहाड़ा पंथ बुही थळवटी आई।
काका लाड घर आलरै तेजल पोइचाई।।

टाबर चारै टोगड़ा जां साथे जावै।
वाला बांदै बाछड़ा तक घोड़ा लावे।।
बाळक तोही न बीसरै घर रीत जणावै।
बारट आलो बाछड़ा जोवण कज जावै।

सूतो चूंडो नींद सुष, सिर अहि कीधो छत्र।
जद आले मन जाणीयौ, है कोई छत्रपत।।
अही फण कीधो उपरा भुपत तप भारीह।
आलै मन जद जाणीयो, ओ कोई अवतारीह।।

आला चारण ने 'अही फण' की छत्रछाया सूं छत्रपति भूप बणण री बात मन मांय लागगी। उण खासी ऊँडी सोच रे पछै राव चूंडा ने मोट्यार होवतो देख्यो। उण ने मल्लीनाथजी कनै लेग्यो अर होनहार रे होवते चिकणे पात रे सागै पूत रा पांव पाळणै मांय दीखे री बात कैय ने मल्लीनाथजी ने सूंप दियो–

आलो चूंडो ओलषै, मन हरष न मावै।
चढ़ीया आलो चूंडरज, मिलवा कज जावै।।
मालासुं चूंडो मिलै केई कोड क़रावै।
मुरधर चूंडो महपती मालो फरमावै।।
तोर बंधसी ताहरो चंडी बर पावै।
अस तो चंडी आपसी मन चिन्ता मिटावै।

मल्लीनाथजी उण री जाच करण खातर राव चूंडा ने मुसलमानां रे कायलाणा थाणै माथै कब्जो करण खातर भेज्यो। उगमसी ईंदे री लूंठी मदद सूं राव चूंडा इण अभियान मांय सफल व्हियो। कायलाणा रै थाणै माथै राव चूंडा आपरौ झण्डो गाड़ दियो। इणं रो वरणन इण भांत है–

उगमसी नै आषीयो, मुषां ज लावण माल।
चूडानै संग ले चढ़ो, ढाबो थे हुय ढाल।।

वीरमदेरा वेठरी, घड़े जंगो मन घात।
नाहर भेला रै नहीं, बसुधा जाहर बात।।

इण रै पछै उगमसी ईंदे आपरी पोती रो ब्याव राव चूंडा सू करियो। ओ सगळो आख्यान इण भांत है–

उगमसी इंदोतनैं पोती परणावै।
मंडोवर मैं दी कर महर माता फरमावै।।

सूतां उठ चूंडेसधर वाड़ा छपवाया।
उण दिन सगपण वासतै उगम फरमाया।।
चामंडरै बरसुं करै अस ओझक आया।
अस रंग बदल्यो ईसरी दूजा दरसाया।।
तद चूंडे चामंडका परचा सच पाया।
चंडी वर हुय चुंडकुं सामांन सजाया।।
उगम घास मंगावणा मुगलां फरमाया।
सज भड उबम पांचसैं संग चुंडा लाया।।
छळ कींधा बळ दाषीया धर कारण धाया।
हर बळ इदा रांण हुय गाड़ा गरणाया।।
ऐम तळेटी आवीया चूंडे मन भाया।
ऊभां सोबायत अटा निजरां गुजराया।।
सो गाडा उगम सर बगड़ भितर लाया।
चामंड चामंड मुष चवे जैकार जपाया।।
उसरा थांणा उथपे थिर थांनक थाया।
मुगला दोय हजार कुं घोरां घलवाया।।
राज मंडोवर चूंडकुं चामंड बगसाया।।

उगम चूंडे आगला रजवाट बणाई।
मुरधर लीधी महैपती धर फे दबाई।।
कीलमां थांणा काटीया पाछी धर पाई।
राणै पोती रावनै पेषे परणाई।।
दीध मंडोवर दायजे मिल सारां भाई।
हरषस मन राजी हुये ऊगम फरमाई।।

दुगर चौरासी गांव दे थिर राजस थाई।
राव कहै सुण रांणनै कर चिंत न काई।।
साषी सूरज चंद है आंपां बिच आई।
रांण न बदलै राठवड जुग च्यारां तांई।।

दूहा

इदांजी म करजो अवर, पाघर मगुल पछाड़।
दीवी मंडोवर दायजे, चुंडो चंवरी चाड़।।

राव चूंडा ने जद मंडोर रो राज मिळग्यो तो उण रा सगळा भाई गोगादे, देवराज अर जयसिंघ आ'र मंडोर मांय मिळिया। इण रै पछै बादर ढाढ़ी गोगादेजी रे प्रताप रो वरणन करियो है–

सेत्रावैसुं भ्रात सब, मिलण चढ़े माहाराज।
मंडोवर आया मरद, जसो गोगदेव राज।।

कायलांणैं राजस करै, धरै कनकी मन धीर।
मंडोवररो भोमीयो, वल मांगै वरवीर।।

अगला भोम्या आंपणै, मांगै की माहाराज।
वळ देवणनै वीरवर, सजीयो गोग सकाज।।

रमै सिकारां गोगरज कायलांणे डूंगर।
उठीयो दैतज कालीयो एही गल उचर।।
दुथणी जायो को नहीं मंसु जोड़ै कर।
कर पकड़ै पाडयो कमद भेळो कीनो घर।।
अबकै छोडै गोग रज मेळुं जाळ घर।
बह नह मांगु फेर वळ ऐ सच्चा आषर।।
वीर मिलायो गोगरज निजनाथ जलंधर।
महर हुई सीर कर मया सिषराळ तणी धर।।
बप गोगै वळ वादीयो उणवेर उबंबर।
रीजै सम पीरळ तळी सिधराज जोगेसर।
पीठ फुरे नह ताहरी जपीयो जाळंधर।।

इण रै पछै 'वीरवांण' मांय गोगादे अर जोइयां रे जुद्ध रो वरणन है। जुद्ध रो कारण कीं खास नीं होय'र बाप रे बैर रो बदळो इज महताऊ लाग्यौ। दले रे पोते रो ब्याव हो। जानियां ऊल–फेल मांय अेक जाट री गाड़ी खोस ली।

जाट बड़ो घाघ हो। रीस सूं लाल बम हो'र मंडोर, सेतरावा जा'र राठौडां ने हेरो दियो'क दलो जोइयों एकलो इज घरै है। कीं पीड म्हारे ही है। आपरै मतळब राव चूंडा रै बाप रै बैर रो बदळो लेवण रो सांतरो मौको है। इण रो वरणन कविता में इण भांत है–

जाट कटावण थाट सब सुध मारग धायो।
मुरधर षट पोहरां मधे ओ हेरो आयो।।
चवै मिलतां चूंडनै सब भेद सुणायो।
दलो अकेलो घर रयो हूं देषर आयो।।
षाग संभावो ठाकरां लो बैर सवायो।।

पण राव चूंडा जाट ने केयौ के म्हूं मामे ने नी मारू। तूं गोगेजी सूं मिळ। इण रो वरणन बादर ढाढ़ी इण भांत करियों–

चूंडो हेरू सुचवै, पाछौ वचन प्रीयोग।
हुं मांमो मारूं नहीं, तुं संग लेजा गोग।।
घर चित जा तु धीरीया, गोगे कने चलाय।
वाटां जोवै वीरवर, करसी जेज न काय।।
धीरप दे मिल धीरसुं, समषे विडंग सधीर।
सुगन लेर चढ़ीयो सरस, वेर लेवण वरवीर।।

अळगासुं अस षेड़ीया अर सीस असंगै।
उठ बेदला जोईया सूतो कन जगे।।
ऊभा गोगा राठवड पित वैर ज मंगै।।

इण जुद्ध मांय दलो मारिजग्यो। लूटपाट सूं पैली दला री डीकरी देऊ गोगे ने आपणो भाई बणा'र खुद रे मां जायै भाई हांसु ने बचाय लीयो। जिण रो वरणन ओ है–

देउ सषीयां साथ ले सज बारै आया।
वधावे गोगे कमध गीतां गंवराया।।
वैर पितारो वालीयो भल कीधी भाया।
तिलक कीयो इण कारणै लैसुं मन चाया।।

कहीयो जद गोगे कमध मांगो मुष बाई।
सिर दु मारो काट कर विच थाल धराई।।
ओ सिर धड रहजो अषी आसीस दराई।
हैसु पमंग पड़ाहीयो माने दे भाई।।

षबरां मेलुं धीरपै पुगल पोहोचाई।
पूंगा धड सिर बाटंजो भिड वेंनु भाई।
देऊ दलारी डीकरी, बेठां हुत सवाय।
तिलक करे गोगा तणे, हैसु लियो बचाय।।

आ देऊ री कूटनीति ही। हासू ने गोगे रै जावते ही पूगल रै जोइयां ने खबर कर लारो करायो अर कह्यो–

हैसु रोवण हक नहीं संज होय सधीरा।
तुं जाया दल राजदा नांषै चप नीरा।।
पमंग चढ़ै पड़ाहीये पुगल जा वीरा।
गोगा कुसल न जावसी घट ऊभा धीरा।।

गोगो कठेई नीं लाधौ पण रोही रे भोमिये राइके गरज साजी दुस्मण री। गोगे जावते उण रो माडाणी बकरो खोस लियो हो। उण री रीस सूं गोगे रो भेद बता दियो जोइयां ने। कुण नी जांणे आंधे नै तो पछै कांई चाईजे – दो आंख्या। जोइयां तो दड़ीदौट गोगे रे ठिकाणे लच्छूसर तळाब माथै जाय काटक्या। गोगे रा घोडा चरण ने गियोड़ा हा घास। उण टेम गोगे रे बचण रा नीं हा सरंजाम खास। खुद ही पेट पूजा मांय उळझ्योड़ो हो। जोइयां री बण आई। पण जुद्ध री रटक तो रटक ईज व्हे–

रजवट जोइया राठवड़ जुटा षळ जके।
सेल भचड़का युं सहै किरमाळ कड़के।।
जरदाळा अर जोसमै कैमर खरळकै।
धड़ पड़िया सिर धांफरै मुष मारस बकै।।
तेग धड़ा भड़ बिछड़े पड़ लोथ दड़कै।
भड़ घमसाण प्रमाण भल जमरांण जऊकै।।
अषाड़ै असमांनमै रथ भाण ठहकै।
एसा गोगा धीर दउे आंण चढ़ीया चकै।।
गुणीयण ऊभा बादमै बोहळा जस बकै।
बरवा हुरां अछरां बेहुं हकबकै।।
दोनुं ओड़ां षेग दे लोही धकधकै।।
जांणक भरीय पषालदा मुष षोल्या सिकै।
धरती पड़ीया धीरदे वायक मुष बकै।
जांण न पावै जीवता नर गोगा जकै।।

धीर पोहडे षेत विच सिर बिछडे धड़।
उदल हेसु आहड़ै बड जोस बड़ बड़।।
कंवर भिड़वा कारणै असमान भुजा अड़।
जोध बेहु रिण जुटीया षळ षाग षड़ा षड़।।
पड़ीया अस भड़ पाषती रिणसु कैम छड़।
काळ तणी गत कोपिया भिड़ीयाळ महा भड़।।
पंषणीयां भष पूरीया रिण रैणा रतड़।
चड़ै विमांणां चालया लंकाळ बेहु लड़।।
उदल हैसु धीर दे रिण षेत विचा पड़।

चड़ वड धानंष चाढीया गुण किध भणंका।
तीर छछोहा छुटगा नह सु जतनंका।।
केता बगतर तन कटा जुझा भड़बंका।
जोइया कमधज जुटीया अध जीत असंका।।

झिलमां बीजळ वाड झड षग बाज षणंका।
ऐसा गोगा धीरदे भिड़ीया भड़ बंका।।

गोग वहटा षेत विच रजवाट उजाळी।
आयो जादम ऐलै भूपत समसेर संभाळी।।

सगा रूक समाप दै कर रीझ बडाळी।
रांणक बळतां गोगरज समसरे संभाळी।।

बैग वुही कर बीजळा जंगा दोय डाळी।
कहीयो गोगै हास कर दे सगा ताळी।

इण विपद मांय गोगे रा दोन्युं पग कटग्या। उण आपरै इष्ट नै याद करियो। तो जलंधरनाथ री किरपां सुं पांव जुड़ तो गिया पण ऊल्टा जुड़ गिया। आखिरकार जलंधारनाथजी खुद उण नै दसमों सिद्ध मान'र साथै लेग्या–

कमंध गोगो अमर कीधो नमो जलंधर नाथ।
नवनाथजी नवनाथ नाथां ऊपरां नवनाथ।।

अठै आय आ पोथी पूरणता पावै। अर इण रै पछै कवि इण मांय मौजूद निसाणियां, दूहा अर गीतां रै संकलन रो लेखो करे।

सात बीस नीसांणीया, ऊपर पांच सवाय।
एक गीत इतरा दूहा, भणीया गुण सुभ भाय।।

नवगुण पूणा तीन सै, वीरवांण जसवार।
सुध वाचीजो सकवीयां, बाधर कही विचार।।
सवासे नीसाणीयां, दुहा पुण सत दोय।
गीत एक इण ग्रंथमैं, समजहु वाचक सोय।।

मूल्यांकन

राजस्थानी वीर रस री पोथियां री लूंठी परम्परा मांय इण 'वीरवांण' री ठावी–ठौड़ है। आ साहित् री पोथी हुवण रै साथै–साथै लुप्त हुवतो इतिहास रो जीतो–जागतो प्रमाण है। जिण मांय उण टेम री तसवीर सफीट दीसै। जिणरी भाषा अर शैली दोनूं टणकी है। जको इतिहास–पानो वक्त री धूल सूं धुंधळावतो हो कवि आपरी कविता सूं उण नै जीवतो राखियो आ बात कीं कम कोयनी। चारणां रे तो सरस्वती कंठ बोले–राजस्थानी साहित् मांय उणां रो योगदान सब सूं बतो है अर गिणीजैभी। ढाढ़ी, ढोली, नगारची, राव, भाट अे जातियां भी जुद्धवीरां रा गीत गावती रैयी हैं, लडाई रा चश्मदीद गवाह भी रह्या है, नगाड़ौ भी बजायौ है अर काम पड्यां तरवार रा करतब भी बताया। चारणां रै बारै मांय कलम अर तलवार रा धणी हुवण री बात घणी गुमैज रे सागै लेरीजै। पण 'वीरवांण' रो लिखारो बादर ढाढी इणी सांकळ री अेक कड़ी लखावै – इण री ओज गुण आळी भाषा इसी चारण परम्परा री हामळ भरै – जथा–

दिली सुं चढी आया दुझल गोरी सुलताणा।
मांडलगढ़ मैहमंद चढ, षामंद षुरसाणा।।

सांतु लोपी सायरा मिलपा जजलांणा।
इण विध मैहमंद आवीयो सझ दल घमसांणा।।
हजरत बेंहुं भेळा हुआ पूरब पिछमांणा।
है बेहुं घर मोटा बोहत छोटा रहमांणा।।
षोज गमावण षूनीयां जोडै जमराणा।
रीस करै ज्यां रोळवै बोळै महाराणा।।

इण भांत आ रचना साहित री पोथी रे रूप में आपरे कलेवर मांय इतिहास नै समेट राख्यौ है। डॉ. गोरीशंकर हीराचन्द ओझा, श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ अर आसोपा जेड़े इतिहासकारां री इतिहास पोथ्यां में इण 'वीरवांण' रो लेखो है,

टीप है। इण टिप्पणियां सूं आ पोथी फैरूं खुलेला। इण वास्ते ओ ब्योरौ ज्यूं रो त्यूं इण भांत है –

"मुहणोत नैणसी लिखता है–'वीरम महेवे के पास गुढ़ा (ठिकाना) बांध कर रखता था। महेवा में खून कर कोई अपराधी वीरमदेव के गुढ़े में शरण लेता तो वह उसे अपने पास रख लेता। एक समय जोहिया दल्ला भाइयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया, जहां रहते समय उसने अपना विवाह कर लिया। कुछ दिनों बाद वह वहां से अपनी स्त्री सहित स्वदेश की तरफ लौटा। मार्ग में महेवे पहुँच कर वह एक कुम्हारी के घर ठहरा और एक नाई को बुलवाकर अपने बाल बनवाये। नाई ने उसके पास अच्छी घोड़ी, सुन्दर स्त्री और बहुत सा धन देखा तो तुरन्त जाकर इसकी खबर जगमाल को दी। अनन्तर जगमाल की आज्ञानुसार उसके गुप्तचर कुम्हारी के घर जाकर सब कुछ देख भाल आये। कुम्हारी ने इसका पता पा दल्ला से कहा कि तुम पर चूक होने वाली है। फिर रक्षा का मार्ग पूछे जाने पर उसने उसे वीरम के पास जाने की सलाह दी। तदनुसार दल्ला अविलम्ब स्त्री सहित वीरम के गुढ़े में जा पहुँचा। पांच – सात दिन तक वीरम ने दल्ला को अपने पास रखा और उसकी भले प्रकार पहुनाहि की। विदा होत्ते समय दल्ला ने कहा कि वीरम, आज का शुभ दिवस मुझे तुम्हारे प्रताप से मिला है। जो तुम भी कभी मेरे यहां आओगे तो चाकरी में पहुँचूंगा। मैं तुम्हारा राजपूत हूं। वीरम ने कुशलतापूर्वक उसे उसके घर पहुंचवा दिया।

'माला के पुत्रों औ वीरमदेव में सदा झगड़ा होता रहता था, (अतएव) वह (वीरम) महेवे का परित्याग कर जैसलमेर गया वहां भी वह ठहर न सका और पीछा आया तथा गावों को लूटने और धरती का बिगाड़ करने लगा। कुछ दिनों बाद वहां का रहना भी कठिन जान वह जांगलू में ऊदा मूलावत के पास पहुंचा। ऊदा ने कहा कि वीरम, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं, कि तुम्हें अपने पास रख सकूं, अतएव आगे जाओ। तुमने नागौर को उजाड़ दिया है, यदि उधर का खान आवेगा तो मैं उसे रोक दूंगा। तब वीरमदेव जोहियावाटी में चला गया। पीछे से नागौर के खान ने चढ़ाई कर जांगलू को घेर लिया, जिस पर गढ़ के द्वार बन्द कर ऊदा भीतर बैठ रहा। खान के कहलाने पर ऊदा भीतर बैठ रहा। खान के कहलाने पर ऊदा उससे मिलने गया, जहाँ वह बन्दी कर लिया गया। इस पर उसकी माता से पुछवाया गया, पर वह भी डिगी नहीं। दोनों की दृढ़ता से प्रसन्न होकर खान ने ऊदा को मुक्त कर दिया और वीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया।'

'वीरम के जोहियों के पास पहुंचने पर उन्होंने उसका बड़ा आदर–सत्कार किया और दाण में उसका विस्वा (भाग) नियत कर दिया। तब वीरम के

कामदार कभी–कभी सारा का सारा दाण उगाहने लगे! यदि कोई नाहर वीरम की एक बकरी मारे तो यह कह कर कि नाहर जोहियो का है वे बदले में 11 बकरियां ले लेते थे। एक बार ऐसा हुआ कि आभीरया भाटी बुक्कण को, जोहियो का मामा व बादशाह का साला था और अपने भाई सहित दिल्ली में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा।

इस पर वह भाग कर जोहियों के पास जा रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत सा माल और वस्त्राभूषण आदि थे। गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर वीरम ने उसे मार डाला और उसका माल असबाब तथा घोड़ें आदि ले लिये। इससे जोहियों के मन में उसकी तरफ से शंका हो गई। इसके पांच–सात दिन बाद ही वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड़ कटवा डाला। इसकी पुकार भी जोहियों के पास पहुंची पर वे चुप्पी साध गये। एक दिन दल्ला जोहिये को ही मारने का विचार कर वीरम ने उसे बुलाया। दल्ला खरसल (एक प्रकार की छोटी हल्की बैलगाडी) पर बैठ कर आया, जिसके एक घोड़ा और एक बैल जुता हुआ था। वीरम की स्त्री मांगलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था। चूक का पता लगते ही उसने दल्ला को इशारा कर दिया। इस पर जंगल जाने का बहाना कर दल्ला खरसल पर चढ़कर घर की तरफ चल दिया। कुछ दूर पहुँच कर खरसल को तो उसने छोड़ दिया और घोड़े पर सवार होकर घर पहुंचा। वीरम जब राजपूतों सहित वहां पहुंचा उस समय दल्ला जा चुका था। दूसरे दिन ही जोहियों ने एकत्र होकर वीरम की गायों को घेरा। इसकी खबर मिलने पर वीरम ने जाकर उनसे लड़ाई की। वीरम और दल्ला परस्पर भिड़े। वीरम ने उसे मार तो लिया पर जीता वह भी न बचा और खेत रहा। वीरम के साथी गांव बड़ेरण से उसकी ठकुराणी (भटियाणी) को लेकर निकले। धाय को अपने एक वर्ष के पुत्र चूण्डा को आल्हा चारण के पास पहुँचाने का आदेश दे कर राणी मांगलियाणी सहित सती हो गई।"

(जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ 193)

श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ

"यह सलखाणी के पुत्र और रावल मल्लिनाथजी के छोटे भाई थे। यद्यपि मल्लिनाथजी ने इन्हें खेड़ की जागीर दी थी, तथापित जोहिया दला की रक्षा करने के कारण इनके और मल्लीनाथजी के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ। इससे इन्हें खेड़ छोड़ देना पड़ा। वहां से पहले तो यह सेतरावा की तरफ गए और फिर चूंटीसरा में जाकर कुछ दिन रहे। परन्तु वहां पर भी घटनावश एक काफिले को लूट लेने के कारण शाही फौज ने इन पर चढ़ाई की। इस

पर यह जांगलू में साखला ऊदा के पास चले गये। इसकी सूचना मिलने पर जब बादशाही सेना ने वहां भी इनका पीछा किया, तत्र यह जोहियों के पास जा रहे। जोहियों के मुखियां कल्ला ने भी इनकी पहले दी हुई सहायता का स्मरण कर इनके सत्कार का पूरा–पूरा प्रबन्ध कर दिया। परन्तु कुछ ही दिनों में इनके और जोहियों के बीच झगड़ा हो गया। इसी में वि. संवत् 1440 (ई. सं. 1383) में यह लखबेरा गांव के पास वीरगति को प्राप्त हुए। वीरमजी के पांच पुत्र थे : 1. देवराज, 2. चूंडा, 3. जैसिंह, 4. विजा और 5. गोगादेव।

(मारवाड़ का इतिहास प्रथम खण्ड)

आ घणी महताऊ बात है'क बादर ढाढी मुसलमान कवि हुवण रे उपरांत भी उण आपरे काव्य मांय विपक्षियों रो वरणन भी पूरी निष्पक्षता अर उदारतां सूं करयौ अर भारतीय परम्परा अर संस्कृति रे अनुरूप करयौ। 'वीरवांण' चम्पू रो रूप लियोड़ी है। पद्य रै साथै – साथै गद्य रो सांतरो प्रयोग इण पोथी री विसेसता है। इण रूप, इण वरणन सूं 'कुंवरसी सांखलो', 'अचलदास खीची री वचनिका', खीची गंगेव ने दोपहरे री बात भी याद आवै। जका चावा चम्पू काव्य है।

भासा वीर रस सूं सराबोर अर ओतप्रोत है। पढ़ण सूं डकार अर टंकार मय ध्वनियां री भरमार सूं भुजांवा फड़कै, दांत कड़कै, भौंह चढ़े अर घोड़े री पीठ तकै। जौद्धा मै मरण–मारण खातर एक चढ़े अर दूजी उतरे रो–घणो महताऊ बरणन इण पोथी रे कथ्य मांय अनुस्यूत है। सगळो भासा रो ओजस्वी रूप। बादर ढाढ़ी कठेई मर्यादा रो उल्लंघन नीं कर्‌यौ। जेड़ी बात मन नै लागी, आंख्यां देखी, उण रो वरणन उणी दीठ सूं बिना किणी लाग–लपेट रे कर्‌यौ। इण वास्ते ईज इण रो कथ्य इतिहास री घणमूंघी खांण है।

वीर रस तो काव्य री हर ओळी–ओळी मांय है। शब्दां रो चयन घणो ऊंचौ है, उम्दा है। वीर रस री सृस्टि मांय घण महताऊ भूमिका नै निभावे। जथा –

वीरम अंग विहंडीया मुछां बल घलै।
देष इतै देपाल दिस कर क्रोध अचलै।।
भीलपनै कु भाषीयो झट तरगस झलै।
पाव हात सब कट पडे किधा चष ललै।।
धानष सामा पाव सर दांता झलै।
छुटा तीर अचिंतका धड़ फुटा ढलै।।
चुका वैग पिलांणतैं उलटा कर चलै।।

धनंष चढाया पुनीयै षुरसांण चौहटी।
तन फोडे तरगस गया ज्यूं बीज झपटी।।
ढह पड़ीयो देपालदे धरलणी चोटी।
परगट कीधी पनीये रजपूतां रोटी।।

राठोड़ां अरू जोइयां कलमा चकरारी।
वीरम मदु पोढीया सझ षाग दुधारी।।
च्यार सहस पड सुरमा भुज चिरदां भारी।
साषां सारी सोह चढ साषो घर सारी।।
अंग वीरमरै ओपीया, घाव एक सो दोय।
अंग मदुरै उपरा, गिणती चढै न कोय।।

भासा ने कवि बादर ढाढ़ी प्रभावी बणावण खांतर ठौड़–ठौड़ प्रतीकां, बिम्बां, रूपकों अर उपमाआं रो भी ओपतो अर फूटरो आसरौ लियो है। जथा रूप –

घोड़ा सहतो गुड़ गयो लुटीयो धरती पर।
जांण कबूतर छुट गयो हातांबाजीगर।।

ओ धन वीरम आपरै घरमै नह मावै।
वीरम औ भष बाघरो पोह केम पड़ावै।।

कहावतां अर लोकोक्तियां रो सांतरौ प्रयोग किणी भी पोथी री गुणवत्तां ने निखार सकै। 'वीरवांण' मांय इण रौ ओपतो प्रयोग जोयो लाधै–

पग पग नेजा पाड़ीया, पग पग पाड़ी ढाल।
बीबी बुजै षांनने जोध किता जगमाल।।

मारे वीरम रिण मुवा भड़ च्यारूं भांई।
धूड़ बलोइण धाड़नै जो कीधी सो पाई।।

दूहो राजस्थानी रो घणो लाड़लो अलंकार मानीजै। नीसांणी संग रै सागै दूहे रो मेळ 'वीरवांण' री कलात्मकता री लूंठी पहचाण है। जथा–

इदांजी म करजो अवर, पाधर मुगल पछाड़।
दीवी मंडोवर दायजे, चुंडो चंवरी चाड़।।

भुषा तिरसा आपरा वांधीजे सोड़ा।
ढलीया हात न आवसी गोगादे घोड़ा।।

दरसण सिध आपै दियो माथै कर मैहर।
पाव उलटा सांधीया ओलषाण तणीयर।।
इळ अंबर गोगादतै तो काया अमर।
हुय सिध दसमो हालीयो गंग नाथ जलंधर।।

सींहानै सलषांणीयां, त्यांरी एक तरेह।
आ दुअ पतीओ धरो, कुण विसवास करेह।।

वैण सगाई यूं तो पूरी पोथी मांय अनुस्यूत है पण कीं उदारण देखण जोग है–

दरगासुं मुंजावरां, कयो दलानै आय।
वो फरहास ज पीररो, वीरम लीयो वडाय।।

पोथी रै ठेठ आखिर मांय अेक गीत चितकिळोळ है अर ओ काव्यकला रो सांतरो उदाहरण है–

ऐ वीरळ तळी आरांण उनी षलां तंडळ षाय।
बीजला ज्युं बहै वाद्यै घड़ा एकण घाय।।
तो घण घाय जी घण धाय धापी रळ तळी धण धाय।

वैर वीरम तणै वाही निसंष जोध।
नीडा रहात गोगादेव हुंता धपाई इत धार।।
रत धार जी रतधार धापी रळ तळी रत धार।

कटे उदल दलो कटियो धीर हंसु वैर वैर।
वीरम तणो वाले बालजे इम बैर।।
इम वैर जी बैर बांगे वालयो इम बैर।
कट धर रहै सुता दला कर उभै बटका इस।
छुटती घर जाय छुटी कीसे सवालै सिस।।
धर सीस जी धर सीस जाती बाजवी धर सीस।
वीजड़ गमीयै अरांवाळ जोइयां जड़मूल।
बाप कज वैरीया बेटो घडच भेला धूल।
ऐ धूल जी ये धूलजी अरीया काटीया काटिया ऐ धूल।
भाज रांणक देव भाटी सबलडो जलंधर नाथ।।
नवनाथजी नवनाथ नाथां ऊपरां नवनाथ।

गीत साहित् रे बिना राजस्थानी साहित् अधूरो अर एकांगी लागै। इण खातर गीत री महत्ता रै मुतलिक अनेक बातां प्रचलित है। 'गीतड़ा के भीतड़ा मिनख री कीरत या तो गीतां सूं सुरक्षित रैवे या पछै स्मारक, भवन अर किलां सूं । इण वास्ते कहिज्यो भी है –

"भींतड़ा ढह जाय, धरती मिळै।
गीतड़ा नह जाय, कहै राव गांगो।।"

इण री भासा तुकांत है अर सहृदय पाठकां माथै सांतरौ प्रभाव भी व्है। ध्वन्यात्मकता, लयात्मकता, संगीतात्मकता अर नाद सौन्दर्य री बणगट घणी महताऊ लखावै –

आयो पुगलसुं अठै, बादै षडीयां ऊंट।
कसीद कैयो कसमीरदे, लेगा धन सब लूट।।

भासा रौ एक आंटो ओ भी है–

वळ अणकळ दी ठेह, वीरह वीरम ये कही।
वळियो रण .बांधेह, मिळिया सारा मोहरी।।

दूहा अर नीसांणी रौ बंध 'वीरवांण' री लूंठी ओळखांण है। बादर ढाढ़ी री बहुज्ञता अर ग्यांन री ऊंडी दीठ रा अेनाण है। जद वीरम नीं रियो अर जोइयां जद घणी रीस में हा तो दले जोइये रो ओ निर्णय कवि री प्रतिभा ने दरसावै–

दलै बिगड़ी देखने की जेज न काइ।
तेजल संग दे मेलीया चुंडो अरू बाइ।।
दोय दीहाड़ा पंथ बुही थळवटी आई।
काका लाउ घर आलरै तेजल पोहचाई।।

'वीरवांण' मांय जकी खास–खास घटनांवा सूं इण रौ कथ्य बण्यौ वो इण भांत है–

(अ) जैतसिंह रो झगड़ो – गुजरात माथै हमलो।

(ब) मालदेजी रो समो – अहमदाबाद रै महमूद बेगड़ा सूं बाथैड़ो, गींदोली रो अपहरण अर पांच जुद्ध।

(स) वीरमजी अर जोइयां रो जुद्ध – इण जुद्ध रा कारण, परिणाम अर दिल्ली रे बादशाह रो आक्रमण। जोइयां अर राठौड़ां री अंतरकळह रो सूत्रपात अर जुद्ध रो अनूठौ वरणन।

(द) वीरमजी रे बेटे राव चूण्डा रो मण्डौर माथे कब्जो, ईंदा उगमसी री पोती सूं ब्याव अर मंडोर नै दायजे मैं पावणी।

(य) गोगेजी अर दले जोइये रो जाट री करामात सूं झगड़ो। वीरमजी री मौत रो बदळो, गोगेजी रा पग कटणा अर उल्टा जुड़ना अर जलंधरनाथजी री किरपा सूं दसवों सिद्ध मानीजणो।

अे सगळी घटनावां इतिहास सूं मेळ खावै, जिणरो जिक्र उण टैम री दूजी पोथीयां मांय भी लाधै।

इण सगळी खैंचळ रे पछै सार रूप मांय केवणो ओ है'क 'वीरवांण' रो नाम 'दलायण' भी व्हे सकतो क्यूंके बादर ढाढी दले जोइये रो ईज आश्रित कवि हो। पण उणनै राव वीरम रो चरित जोइयां रे चरित सूं इक्कीस लागौ। पण दले जोइये भी कदैई आपरौ मिनखपणों नी गुमायो। हमेश पूरी पत राखी। राव वीरम सन् 1390 मांय जोइयां सूं लड़ता जुद्ध मांय खेत रह्या। आ पोथी 285 छंदा मांय गुंथिज्योड़ी इतिहास री घणमूंगी खांण है। नायक वीरम, उणरी जोड़ायत राणी मांगलीयाणी अर प्रतिनायक जोइयो दले जेड़ा टणकेल वीरां रे आंकलन सूं कवि उण टैम री सामंती व्यवस्था आळै जीवण री सांस्कृतिक परम्परा नै उकेरी है। धरम री जड़ हरी व्है आळी बात ने घणे हेत सूं बखांणी है। भासा घणी ओजस्वी है। ज्यूं –

पग पग नेजा पाडिया, पग पग पाड़ी ढाल।
बीबी बूझै खांन नै, जग केता जगमाल।।

अबै कैय सकां के आ पोथी कथ्य अर शिल्प री दीठ सूं उच्च कोटि री है। पण हाल इणनै ओ आदर साहित्य समाज मांय नीं मिळयो जिणरी आ हकदार है।

अनुभूति अर अभिव्यक्ति रे अनूठै मेळ रो इतिहास रे कलेवर वाळो भाषा काव्य 'वीरवांण' राजस्थानी भाषा साहित्य रो गौरव है। वठै ईज दूजी कानीं कवि बादर ढाढी रे जस अर कीरत रो कमठांण है।

इण वास्ते बादर ढाढी नै समकालीन दूजी बिरादरी आळै कवियां री पांत मांय दरजो मिळणो चाहिजे। जकै रो बो हकदार है।

सार–संकलन

मध्यजुग रै चारण साहित् रे जमानै मांय अेकला बादर ढाढ़ी 'वीरवांण' री पोथी ले आपरी ठावी ठौड़ बणाई।

उण जुग री सांची पड़ताळ करता थकां आश्रयदातां सूं बत्तो दुसमण नै अंगीज बिरदावण आळौ अेकलो कवि–बादर ढाढ़ी।

राजस्थान री मरूभौम मारवाड़ री मुंडै बोलती तसवीर है– 'वीरवांण'।

'वीरवांण' सूं बादर ढाढ़ी री ख्याति हिन्दी कहानीकार चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' री याद ताजी करावे।

बादर ढाढ़ी री 'वीरवांण' मांय मुसलमाण अर राजपूत राजाआं रो लूट पछै मैळ, राखड़ी डोरा, शरणागत वत्सलता, काके–भतीजे रो जुद्ध, नमकहलाली, आशंका रो जुद्ध, लूट–खसोट, धरम रे बहानै लड़ण री तजवीज, तिजणियां रो अपहरण, बदळै मांय गींदोली, सांयढियां रो खेंग, फरास नै बाढ अर ढोल बणावणौ, बदले में गायां घेरनी, राव चूंडे रो कळाऊ मांय आला चारण कनै मैलणौ, टोगडियां चरावतां सौवणो अर अहि री छत्रछाया, आला चारण नै भूप बणण रौ पूर्वाभास, राव चूंडा रो कायलाणा माथै हमळो, ईंदा रे अठै तोरण बांधणौ, मुफत में मंडोर रो राज मिलणों, दला जोइयां रै पोते रो ब्याव, इण ब्याव रै मौके जाट नै लूटणो, जाट सूं दले जोइया रै एकले होवण रौ भेद गोगे नै मिळणौ, दोनूं री लथौबथ, दला री मौत, गोगे रै बाप रो बदळौ, गोगे री जीत, जीत री हूंस मांय पाछै आवतै राईके रो जबरण बकरो खौसणौ, राईके रो काळजो बळणौ अर जोइयां नै गोगे री ठौड रो भेद बतावणौ, निहत्थे गोगे रा पग बढणा, जलंधरनाथ री किरपां सूं पाछा जुडणा पण उळटा जुड़णा अर दसमों सिद्ध कथीजणौ आद अेक रे बाद अेक घटनावां रो घटणौ अर कथ्य रौ सांतरौ बणणौ – 'वीरवांण' रै अेतिहासिक होवण री सांतरी भूमिका है।

रचना रो काळ, कवि रे जनम मरण री तारीख रो कठेई प्रामाणिक अन्तः साक्ष्य रो नीं लाधणौ हाल जिज्ञासा रो विषय बण्यौड़ो है।

कवि उम्दा, रचना सांतरी।

कुणनी जाणै – 'खाग अर त्याग' ईज वीरां री कामना रह्यी है। राजस्थानी काव्य उण कीरती रौ 'अक्षय उद्गीथ' है। बादर ढाढी अर 'वीरवांण' इणी'ज बात रौ प्रमाण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

राजस्थानी भाषा और साहित्य — मोतीलाल मेनारिया

राजस्थानी भाषा और साहित्य — हीरालाल माहेश्वरी

डिंगल में वीर रस — मोतीलाल मेनारिया

वीरवांण — बादर ढाढ़ी

सम्पादिका — रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत

प्रकाशक — राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थानी सबद कोस — सीताराम लालस

जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 1 — गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

मारवाड़ का इतिहास — विश्वेश्वरनाथ रेऊ

वीर सतसई (भूमिका) — सूर्यमल्ल मिश्रण

अचलदास खीची री वचनिका
— सादुल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर सन् 1960

मुंहतां नैणसी री ख्यात भाग–2
— राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राजस्थान) 1962

Indian Insti... 115827 10/11/04

रंगरूड़े राजस्थान री धरा "वीरभोग्या वसुन्धरा" री ओळखाण हैं अर, "मरणां नूं मंगल गिणे" रो प्रमाण है, औ मरू–मैहराण वीरता रै बखांण नै कीरत रे कमठांण री घणमूंघी खाण है। औ राजस्थान इणी वीरता, त्याग अर बलिदान रै खातर मुलकां चावौ है। अठारी वीर परम्परा घणी ठावी है। आ जूंझारू जमीं संत, सूरमा अर सतियां रे इतिहास रै मूंडे बोलती पोथी है, धारा तीरथ रो जूनौ धाम है। उण टैम राजस्थानी साहित्य में चारण कवियां रो बोलबालौ हो। उणां रे कंठ मांय सरस्वती रौ बासो मानीजतो। बे आपरे आश्रयदाता राजाआं ने कविता सूं रिझावता अर लाख–पसाव, करोड़–पसाव रा मौटा इनामां साथै जागीरी रा गांव पावता। औ उण जुग रौ सांच हो।

चारण कवियां जकी रचनावां सूं राजस्थानी साहित्य री झोळी भरी है। बे कथ्य संवेदना अर कलात्मकता मांय बैजोड़ है अर डिंगळ शैली री अनूठी मिसाळ है। बादर ढाढ़ी उण जुग रै सांच नै आपरै अेतियासिक प्रबन्ध काव्य 'वीरवांण' मांय उकेरिया जिण सूं आ रचना सवाई गिणीजण री खिमता राखैं क्यूंके बादरढाढी री 'वीरवांण' मांय इण धोरा धरती रै तपन री रूखाळी है। मंडोर रे इतिहास रे उड़ते पानां ने कविता री माळा मांय घटनावां आळे मणियां ने गूंथ पिरोवण री सांतरी खैंचळ है। राजस्थानी साहित्य रे ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्यां मांय 'वीरवांण' ई ठावी ठौड़ री हकदार है। मध्यजुग रै चारण साहित् रे जमानै मांय अेकला बादर ढाढ़ी 'वीरवांण' री पोथी ले आपरी ठावी ठौड़ बणाई। उण जुग री सांची पड़ताळ करता थकां आश्रयदातां सूं बत्तो दुसमण नै अंगीज बिरदावण आळौ अेकलो कवि–बादर ढाढ़ी। राजस्थान री मरूभौम मारवाड़ री मुंडै बोलती तसवीर है– 'वीरवांण'। 'वीरवांण' सूं बादर ढाढ़ी री ख्याति हिन्दी कहानीकार चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' री याद ताजी करावे।

Library IIAS, Shimla
RJ 817.509 2 In 2 B
00115827

ISBN 81-260-1167-9

पच्चीस रिपिया